Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मेघदूत में वर्णित मेघ के विविध रूप

राकेश पाल
शोधच्छात्र, नेहरू ग्राम भारती, मानित विश्वविद्यालय, जमुनीपुर, कोटवा, दुबावल, प्रयागराज,उत्तर प्रदेश।

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 178-180
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

शोधसारांश– महाकवि कालिदास ने मेघ का मानवीकरण करके उसे एक सृजनात्मक, सकारात्मक मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया है। वह सन्देशवाहक, सन्तप्तों का रक्षक, मनुष्यों के सभी भावों को समझने वाला, सम्पूर्ण जगत् को जल देने वाला, पुष्पों को विकसित करने वाला, दावाग्नि को शान्त करने वाला, भगवद्भक्ति करने वाला, दैवीय भाव से युक्त, सम्पूर्ण जीवों का कल्याण करने वाला परम परोपकारी है। मेघ के विविध रूपों के वर्णन करके महाकवि कालिदास मनुष्यों को यही सन्देश देना चाहते हैं कि समस्त मानव इस मेघ के महत्त्व को समझें तथा इसके संरक्षण के लिए सदैव तत्पर रहें। वेदों में इसे पिता कहा गया है। मेघ अपने पितृत्व धर्म का पालन सबकी रक्षा करके कर रहा है। पुत्रों को भी चाहिये कि पितृतुल्य मेघ का संरक्षण करके अपने पुत्र धर्म निर्वाह करें।

मुख्य शब्द– मेघदूत, मेघ, कालिदास, साहित्यम्,यक्ष।

मेघ को दूत के रूप में परिकल्पित करके कालिदास द्वारा प्रणीत मेघदूत काव्य में मेघ को अनेक रूपों में वर्णित किया गया है। कवि ने मेघ को कहीं पर यक्ष के माध्यम से **'सन्देशं मे हर धनपतिक्रोधविश्लेषितस्य'**[i] कहकर दूत के रूप में प्रस्तुत किया है, तो कहीं पर **'धूमज्योतिःसलिलमरुतां सन्निपातः'**[ii] कहकर उसे धूम, अग्नि, जल और वायु के संघात के रूप में वर्णित किया है। मेघ का सर्वप्रथम दर्शन आषाढ मास के प्रारम्भ में रामगिरि पर होता है। मेघ रामगिरि के चोटियों पर उमड़–घुमड़ रहा था, जो तिरछे दाँतों के प्रहार से मिट्टी के टीले को ढहाने का खेल करने वाले हाथी के समान रमणीय दिखलाई पड़ रहा था– **आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुं वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीयं ददर्श।**[iii]

संसार में प्रसिद्ध पुष्कर तथा आवर्तक नामक मेघों के वंश में उत्पन्न यह मेघ कामरूप है अर्थात् अपनी इच्छा के अनुरूप रूप धारण कर सकता है– **जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां जानामि त्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मघोनः।**[iv] मेघ विरही लोगों के हृदय में मिलन की उत्कण्ठा उत्पन्न कर देता है। कवि ने इसे **कौतुकाधानहेतोः**[v] कहकर वर्णित किया है। यक्ष अपनी प्रियतमा के पास अपनी कुशलता का सन्देश इसी मेघ के द्वारा भेजने की इच्छा करता है– **जीमूतेन स्वकुशलमयीं हारयिष्यन्प्रवृत्तिम्।**[vi]

यक्ष मेघ को सन्तप्तों का रक्षक कहकर सम्बोधित किया है। मेघ धूप से सन्तप्त व्यक्ति को छाया प्रदान करके तथा काम से सन्तप्त विरही जनों को उनकी प्रियतमा के पास जाने के समय की सूचना देकर सन्तप्तजनों का रक्षक है– **सन्तप्तानां त्वमसि शरणम्।**[vii] अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त में मेघ को पिता कहा गया है तथा उससे अपने भरण, पोषण एवं रक्षण की प्रार्थना की गयी है– **पर्यजन्यः पिता स उ नः पिपर्तु।**[viii] मेघ अपनी यात्रा के दौरान पर्वतों पर रुककर विश्राम करता है तथा बरसकर अत्यन्त क्षीण होने पर नदियों का हल्का जल पीकर आगे जाता है– **खिन्नः खिन्नः शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र, क्षीणः क्षीणः परिलघु पयः स्रोतसां चोपभुज्य।**[ix]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

मेघ जब अलकापुरी के लिए प्रस्थान करता है तो वह मार्ग में देखने पर ऐसा लगता है कि मानो वायु पर्वत के शिखर को उड़ाये ले जा रहा है– **अद्रेः शृंगं हरति पवनः किंस्वित्।**[x] 'कृषिकार्य मेघ के ही अधीन है' इसलिए ग्रामीण ललनायें बड़ी ही आशाभरी निगाहों से मेघ को देखती हैं– **त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविकारानभिज्ञैः।**[xi]

मेघ आम्रकूट पर्वत की दावाग्नि को अपने मूसलाधार वर्षा से शान्त करता है तथा पर्वत की चोटी पर विश्राम करता है– **त्वामासारप्रशमितवनोपप्लवं साधु मूर्ध्ना वक्ष्यत्यध्वश्रमपरिगतं सानुमानाम्रकूटः।**[xii] मेघ की गर्जन से पृथ्वी पर कुकुरमुत्ता उग आते हैं जिससे भूमि अत्यधिक उपजाऊ हो जाती है तथा इसी गर्जन को सुनकर राजहंस मानसरोवर जाने के लिए उत्सुक हो जाते हैं– **कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीध्रामबन्ध्यां तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मानसोत्काः।**[xiii]

कवि ने मेघ को एक चेतन व्यक्ति की तरह वर्णित किया है। वह मेघ अपने गर्जन से सिद्धों की स्त्रियों को डरा देता है, जिससे वे डरकर काँपने लगती हैं और अपने प्रियतम का कसकर आलिंगन कर लेती हैं।[xiv] पर्वतों पर स्थित मयूर अपनी केका ध्वनि से मेघ का स्वागत करते हैं।[xv] मेघ के आगमन से दशार्ण प्रदेश के जम्बूवनों के फल पकने लगे।[xvi]

वह मेघ अत्यन्त कामुक है। वह वेत्रवती नदी के जल का पान उसी प्रकार से करता है जिस प्रकार से कोई कामुक व्यक्ति किसी स्त्री के अधर का पान करता है।[xvii] इसके आगमन से नीचैःगिरि पर स्थित कदम्ब के पुष्प खिल उठते हैं। यह फूल चुनने वाली स्त्रियों को छाया प्रदान करके उनसे परिचय करता है। नगर की ललनाओं से आँख मिचौली करता है।[xviii] निर्विन्ध्या नदी के जल का पान उसी तरह से करता है जैसे कोई किसी अनुरागिणी नायिका के अधरों का।[xix] वह अपनी बिजली से रात्रि में अपने प्रियतम के पास जाती हुई स्त्रियों को मार्ग दिखलाता है।

वह मेघ महाकाल के धाम पहुँचकर अपने गर्जन से नगाड़े का काम करता है जो कि अत्यन्त प्रशंसनीय है। उस मन्दिर में वेश्यायें नृत्य करती हैं, मेघ अपने जल वर्षण से उनकों नखक्षतों को सुख देता है जिससे वे उसे सस्पृह देखती हैं।[xx] वह मेघ भगवान् शिव के नृत्त के समय हाथी का गीला चर्म बनकर उनके नृत्त में सहायक होता है जिससे पार्वती अत्यन्त प्रसन्न होती हैं।[xxi]

वह मेघ अपनी गर्जन से कार्तिकेय के वाहन मयूर को नृत्त कराता है, भगवान् शिव और पार्वती के लिए सीढ़ी भी बन जाता है। वास्तव में मेघ अर्थात् बादल क्या–क्या कर सकता है? इसका वास्तविक चित्रण कवि ने किया है।

सन्दर्भ

i- पूर्वमेघ 7।
ii- वही 5।
iii- वही 2।
iv- वही 6।
v- वही 3।
vi- वही 4।
vii- वही 7।
viii- पृथिवी सूक्त अ0 12.1.12।
ix- पूर्वमेघ 13।
x- वही 14।
xi- वही 16।
xii- वही 17।

xiii- वही 11 ।
xiv- वही 22 ।
xv- वही 23 ।
xvi- वही 24 ।
xvii- वही 25 ।
xviii- वही 28 ।
xix- वही 29 ।
xx- वही 39 ।
xxi- वही 40 ।